20 संस्कृत में अनुवाद करने के कुछ टिप्स

'अनुवाद' का अर्थ है—एक भाषा में कही गई बातों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना। यहाँ हम हिन्दी भाषा के वाक्यों को संस्कृत भाषा में कैसे व्यक्त करें—इस पर चर्चा करेंगे। यों तो संस्कृत समस्त भारोपीय (इण्डो-यूरोपियन) परिवार की भाषाओं का मूल है और हिन्दी भाषा इसकी विकास-परम्परा से सम्बद्ध है; फिर भी दोनों की प्रकृति में कई महत्त्वपूर्ण अन्तर दिखाई पड़ते हैं।

हिन्दी एक वियोगात्मक भाषा है तो संस्कृत संयोगात्मक। संस्कृत भाषा की प्रकृति समासात्मक है, जबकि हिन्दी भाषा की व्यासात्मक। संस्कृत में परसर्ग या कारक-चिह्न अपने से सम्बद्ध शब्दों का अनिवार्य रूप से अंग होते हैं; वे उनसे अलग नहीं दीखते; जबकि हिन्दी के शब्द कारक-चिह्नों से अलग और साथ दोनों रूपों में होते हैं। यही कारण है कि संस्कृत वाक्यों के शब्दों को स्थानान्तरित भी कर दिया जाए तो अर्थ में कोई अन्तर नहीं दिखता है; लेकिन हिन्दी के वाक्यों के शब्दों का क्रम बिगड़ जाने पर अर्थों में भारी भिन्नता दिखाई पड़ती है। नीचे के उदाहरणों पर गौर करें—

अयं बालकः अस्ति।
अस्ति अयं बालकः। } यह लड़का है।
बालकः अस्ति अयम्।

गधे की गर्दन पर कौवा बैठा था।
कौवे की गर्दन पर गधा बैठा था। } अर्थों में अंतर

इस पाठ में हम हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने के कतिपय व्यावहारिक नियमों की चर्चा करेंगे—

(क) लिङ्ग, वचन और पुरुष संबंधी ध्यातव्य बातें

संस्कृत भाषा में तीन प्रकार के लिङ्ग होते हैं—

(i) पुँल्लिग—यथा बालकः, देवः, गजः, मुनि, साधु आदि।

(ii) स्त्रीलिंग—यथा बालिका, लता, नदी, मति आदि।

(iii) नपुंसकलिंग—यथा फलम्, पुस्तकम् आदि।

संस्कृत में एक ही शब्द कभी-कभी तीनों लिंगों में दिखाई देता है। यथा—

दारा (पुँ०)
भार्या (स्त्री०)
कलत्रम् (नपुंसकलिंग)

इन तीनों का अर्थ 'स्त्री' है।

लिंगों की पहचान के लिए सामान्य रूप से निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें—

पुँल्लिग शब्द

(i) देव, राम, बालक, विश्वपा, मुनि, हरि, पति, भूपति, सखि, सुधी, साधु, गुरु, स्वयंभू, दातृ, पितृ, नृ, रै, गो, ग्लौ—अजन्त संज्ञा शब्द

(ii) जलमुच्, वणिज्, सम्राज्, भूभृत्, धावत्, भवत्, श्रीमत्, गतवत्, महत्, सुहृद्, गुणिन्, पथिन्, युवन्, श्वन्, राजन्, आत्मन्, महिमन्, विद्वस्, वेधस्, लघीयस—हलन्त संज्ञा शब्द।

स्त्रीलिंग शब्द

(i) लता, मति, नदी, स्त्री, श्री, धेनु, मातृ, स्वसृ, नौ—अजन्त संज्ञा शब्द

(ii) वाच्, अप्, गिर्, पुर्, दिश्, दृश्, आशिष्—हलन्त संज्ञा शब्द

नपुंसक लिंग शब्द

(i) फल, वारि, मेघ, अक्षि, मधु, धातृ—अजन्त संज्ञा शब्द

(ii) जगत्, नामन्, ब्रह्मन्, अहन्, पयस्—हलन्त संज्ञा शब्द

सर्वनाम शब्दों की लिंग-तालिका

पुँल्लिंग	स्त्री०	नपुंसकलिंग	हिन्दी अर्थ
सर्व	सर्वा	सर्वम्	सब
भवत्	भवती	भवत्	आप
सः	सा	तत्	वह
यः	या	यत्	जो
कः	का	किम्	कौन
एषः	एषा	एतत्	यह
अयम्	इयम्	इदम्	यह
पूर्वः	पूर्वा	पूर्वम्	पहले, पूर्व
एकः	एका	एकम्	एक
द्वौ	द्वे	द्वे	दो

संस्कृत में वचन भी तीन होते हैं—

एकवचन	— **एक के लिए**	— बालकः	लता	फलम्
द्विवचन	— **दो के लिए**	— बालकौ	लते	फले
बहुवचन	— **दो से अधिक के लिए**	— बालकाः	लताः	फलानि

वचन-संबंधी कुछ ध्यातव्य बातें—

1. जाति के अर्थ में एकवचन का प्रयोग
   बालः चंचलः भवति—बालक चंचल होते हैं।
   छागः बलिपशुः भवति—बकरे बलि पशु होते हैं
2. द्वयम्, युगलम्, त्रयम् आदि शब्दों का प्रयोग एकवचन में होता है। करद्वयम्, मुनित्रयम्, कन्यायुगलम् आदि।
3. समूहवाचक शब्द (गण, समूह, कुल, ग्राम, समुदाय आदि) एकवचन में रहकर भी बहुवचन का भाव व्यक्त करते हैं। जैसे—देवगणः, विप्रसमूहः।
4. प्रदेशों के नाम प्रायः बहुवचन में आते हैं। यथा—बंगेषु, कलिंगेषु आदि।
5. कति, यति, तति का प्रयोग बहुवचन में होता है। जैसे—कति बालिकाः सन्ति ? कितनी लड़कियाँ हैं ?

www.classoomnotes.in

6. नेत्र, श्रोत्र, हस्त, पाद अर्थवाले शब्द द्विवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—
नेत्राभ्यां पश्यति।
श्रोत्राभ्यां शृणोति।

7. दार, अक्षत, प्राण, हस्ताक्षर आदि सदा पुँल्लिंग बहुवचन में और सिकता, सभा, अप्, वर्षा आदि शब्द स्त्रीलिंग बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—सिकतासु, वर्षासु, दारान् रक्षेत् धनैरपि।

8. 'त्रि' से अष्टादशन् तक के सभी संख्यावाचक शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
संस्कृत में भी हिन्दी एवं अंग्रेजी की तरह तीन पुरुष होते हैं—
(क) प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष (3rd Person)
(ख) मध्यम पुरुष (2nd Person)
(ग) उत्तम पुरुष (1st Person)
नीचे लिखी तालिका देखें—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः/सा	तौ/ते	ते/ताः
	वह	वे दोनों	वे लोग/वे सब
मध्यम पुरुष	त्वम्	युवाम्	यूयम्
	तुम	तुमदोनों	तुमलोग/तुमसब
उत्तम पुरुष	अहम्	आवाम्	वयम्
	मैं	हमदोनों	हमलोग/हमसब

(ख) कर्त्ता एवं क्रिया-संबंधी ध्यातव्य बातें

कर्त्ता कारक का चिह्न 'o' और 'ने' है। कर्त्ता ही क्रिया का सम्पादन करता है। हिन्दी के वाक्यों में कर्त्ता की पहचान 'कौन' और 'किसने' प्रश्न से की जाती है। जैसे—

(i) प्रवर पुस्तक पढ़ता है।
प्रश्न—कौन पढ़ता है?
उत्तर—प्रवर (वाक्य का कर्त्ता)
(ii) आशु ने गीत गाया।
प्रश्न—किसने गाया?
उत्तर—आशु ने (वाक्य का कर्त्ता)

कर्त्ता कारक में सामान्य रूप से प्रथमा विभक्ति लगती है। जैसे—रामः, गजः, लता, फलम्, सः, सा आदि। ''कर्त्ता कारक जिस लिंग, वचन और पुरुष में हो उसी पुरुष और वचन की क्रिया लगानी चाहिए।''

यह अनुवाद करने का सामान्य नियम है।

लट् लकार की क्रिया और कर्त्ता का मेल

लट् लकार यानी वर्तमान काल की क्रिया बनाने के लिए निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	न्ति
	गच्छ् + ति	गच्छ + तः	गच्छ + न्ति
	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति

मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
	गच्छ् + सि	गच्छ + थः	गच्छ + थ
	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	आमि	आवः	आमः
	गच्छ् + आमि	गच्छ् + आवः	गच्छ् + आमः
	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

इसी तरह से अन्य धातुओं में भी उपर्युक्त प्रत्यय लगाकर लट्लकार की क्रियाएँ बनाई जाती हैं।

अब निम्नलिखित कर्त्ताओं के साथ धातु में लगनेवाले प्रत्ययों को सेट करें—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः	तौ	ते
	सा	ते	ताः
	तत् (ति)	ते (तः)	तानि (न्ति)
	बालकः	बालकौ	बालकाः
	रमा	रमे	रमाः
	फलम्	फले	फलानि
मध्यम पुरुष	त्वम् (सि)	युवाम् (थः)	यूयम् (थ)
उत्तम पुरुष	अहम् (आमि)	आवाम् (आवः)	वयम् (आमः)

अब नीचे लिखे उदाहरणों को देखें—

(i) लड़का जाता है।

विवेचन—उक्त वाक्य में कर्त्ता 'लड़का' प्रथम पुरुष, एकवचन का है। वाक्य की क्रिया 'जाता है' वर्तमान काल यानी लट् लकार की है। 'लड़का' का संस्कृत 'बालकः' और 'जाना' का 'गच्छ्' होता है। 'गच्छ्' में प्रथम पुरुष एकवचन का प्रत्यय 'ति' जोड़कर रूप बना—गच्छ् + ति = गच्छति।

उक्त वाक्य का संस्कृत रूप हुआ— बालकः गच्छति।

(ii) दो लड़के खाते हैं।

विवेचन—उक्त वाक्य का कर्त्ता प्रथम पुरुष द्विवचन का है। 'बालक' शब्द का द्विवचन रूप 'बालकौ' होगा। प्रथम पुरुष के द्विवचन का प्रत्यय है—'तः। धातु है—खाद्।

हमारा वाक्य बनता है—बालकौ खादतः (खाद् + तः)।

(iii) लड़के खेलते हैं।

विवेचन—इस वाक्य का कर्त्ता प्रथम पुरुष का बहुवचन है, जिसका रूप होगा—बालकाः। प्रथम पुरुष बहुवचन का प्रत्यय 'न्ति' जुड़ेगा 'खेल्' या 'क्रीड्' धातु में और रूप बनेगा—खेलन्ति या क्रीडन्ति।

हमारा वाक्य होगा—बालकाः खेलन्ति/क्रीडन्ति। इसी तरह प्रथम पुरुष एकवचन कर्त्ता रहने पर हमारे वाक्य बनेंगे—

(a) वह जाता है — सः गच्छति।

(b) वह खाती है — सा खादति।

(c) फल गिरता है — फलं पतति।

www.classroomnotes.in

(d) फूल खिलता है — पुष्पं विकसति।
(e) गंगा निकलती है — गंगा निःसरति/प्रवहति।
(f) हाथी दौड़ता है — गजः धावति।
(g) कोयल गाती है — कोकिलः गायति।
(h) हवा बहती है — वायु वाति।
(i) मेघ गरजता है — मेघः गर्जति।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु (संस्कृत में अनुवाद करो) :

1. लता गाती है।
2. सूर्य उगता है।
3. वर्षा होती है।
4. रात होती है।
5. चिड़िया गाती है।
6. पानी बरसता है।
7. नदी बहती है।
8. लड़की हँसती है।
9. शिक्षक आते हैं।
10. छात्र पढ़ता है।
11. धावक दौड़ता है।
12. खिलाड़ी खेलता है।
13. तितली नाचती है।
14. भौंरा गुनगुनाता है।
15. वह लिखती है।
16. रमा पढ़ती है।
17. चाँद उगता है।
18. माँ आती है।
19. मछली तैरती है।
20. यज्ञ होता है।

प्रथम पुरुष द्विवचन के कर्त्ता और क्रिया

वे दोनों जाते हैं/जाती हैं।

विवेचन—इस वाक्य का कर्त्ता प्रथम पुरुष द्विवचन का है; जिसका रूप पुँल्लिग में 'तौ' एवं स्त्री० में 'ते' है। प्रथम पुरुष के द्विवचन का प्रत्यय है 'तः'। 'गच्छ्' धातु में 'तः' जोड़ने पर 'गच्छतः' बनेगा।

हमारा वाक्य होगा—तौ/ते गच्छतः।

इसी तरह निम्नलिखित वाक्यों को देखें—

(a) दो लड़के खाते हैं — बालकौ खादतः।
(b) दो लड़कियाँ पढ़ती हैं — बालिके पठतः।
(c) दो फल गिरते हैं — फले पततः।
(d) दो तारे उगते हैं — तारकौ उदतः।
(e) दो हाथी आते हैं — गजौ आगच्छतः।

प्रथम पुरुष बहुवचन के कर्त्ता और क्रिया

लड़के जाते हैं। लड़कियाँ जाती हैं।

विवेचन—उक्त वाक्यों के कर्त्ता प्रथम पुरुष बहुवचन के हैं; जिनके रूप हैं—'बालकाः' और 'बालिकाः'। प्रथम पुरुष बहुवचन का प्रत्यय है—न्ति। 'गच्छ्' धातु में उक्त प्रत्यय जुड़ने पर रूप होगा—गच्छन्ति।

हमारा वाक्य होगा—बालकाः गच्छन्ति। बालिकाः गच्छन्ति।

www.classroomnotes.in

इसी तरह—

(a) वे खाते हैं	ते खादन्ति।
(b) वे सब खाती हैं	ताः खादन्ति।
(c) लड़के खेलते हैं	बालकाः क्रीडन्ति।
(d) फूल खिलते हैं	पुष्पाणि विकसन्ति।
(e) चिड़ियाँ गाती हैं	चटकाः कूजन्ति/गायन्ति।
(f) नदियाँ बहती हैं	नद्यः प्रवहन्ति।
(g) शिक्षक पढ़ाते हैं	शिक्षकाः पाठयन्ति।
(h) धावक दौड़ते हैं	धावकाः धावन्ति।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. गाय चरती है	2. दो गायें चरती हैं।
3. बादल गरजता है।	4. माता आती है।
5. दो बच्चे खेलते हैं।	6. दो फूल खिलते हैं।
7. वे दोनों नाचते हैं।	8. वे लोग भोजन करते हैं।
9. दो शिक्षक आते हैं।	10. छात्राएँ नाचती हैं।
11. दो हाथी लड़ते हैं।	12. नदियाँ बहती हैं।
13. कुत्ता भौंकता है।	14. दो पंखे चलते हैं।
15. स्त्रियाँ लजाती हैं।	16. वे लिखते हैं।
17. शिक्षक पढ़ाते हैं।	18. लड़के घूमते हैं।
19. तारे चमकते हैं।	20. शीला बोलती है।
21. मदन सुनता है।	22. गंगा आती है।
23. वे लोग सोचते हैं।	24. फल गिरते हैं।

मध्यम पुरुष के कर्त्ता और क्रिया

(i) तुम जाते /जाती हो।

(ii) तुमदोनों आते हो/आती हो।

(iii) तुमलोग पढ़ते/ पढ़ती हो।

विवेचन—उपर्युक्त वाक्यों के कर्त्ता मध्यम पुरुष के तीनों वचनों के क्रमशः हैं—त्वम्, युवाम् और यूयम्। उक्त कर्त्ताओं की स्थिति में प्रत्यय हैं—सि, थः और थ।

हमारे अनूदित वाक्य होंगे—

(i) त्वं गच्छसि।

(ii) युवाम् आगच्छथः।

(iii) यूयं पठथ।

उत्तम पुरुष के कर्त्ता एवं क्रिया

(i) मैं जाता/जाती हूँ।

(ii) हमदोनों खाते हैं। खाती हैं।

(iii) हमलोग रहते/रहती हैं।

विवेचन—उपर्युक्त वाक्यों के कर्त्ता उत्तम पुरुष के तीनों वचनों के क्रमशः हैं—अहम्, आवाम् और वयम्। धातु के अन्त में जुड़नेवाले प्रत्यय भी क्रमशः आमि, आवः एवं आमः हैं।

हमारे अनूदित वाक्य होंगे—

(i) अहं गच्छामि।

(ii) आवां खादावः।

(iii) वयं निवसामः।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. राम जाता है। तुम आते हो। मैं देखता हूँ।
2. शिक्षिका पढ़ाती हैं। छात्राएँ पढ़ती हैं। हम खेलते हैं।
3. मैं रोता हूँ। तुम हँसते हो। वह गाती है।
4. वर्षा होती है। किसान खुश होते हैं।
5. चाँदी चमकती है। हमदोनों देखते हैं। तुम सोते हो।
6. नदी बहती है। कोयलें गाती हैं। हम सोचते हैं।
7. तुम नहाती हो। हम कहते हैं। वे जलते हैं।
8. सूर्य उगता है। प्रकाश फैलता है। चिड़ियाँ जगती हैं।
9. मल्लाह गाते हैं। हम आते हैं। तुम दौड़ते हो।
10. तुम लिखती हो। मैं पढ़ती हूँ। हम दोनों नाचते हैं।

(ग) वाक्य में कर्त्ता के अलावा अन्य कारक रहने पर

इसके लिए हमें सभी कारकों के चिह्न स्मरण रहने चाहिए और साथ ही उनमें लगनेवाली विभिन्न विभक्तियाँ भी। नीचे दी गई तालिका पर ध्यान दें—

	कारक	चिह्न	विभक्ति
1.	कर्त्ता कारक	०, ने	प्रथमा
2.	कर्म कारक	०, को	द्वितीया
3.	करण कारक	से, द्वारा	तृतीया
4.	सम्प्रदान कारक	को, के लिए	चतुर्थी
5.	अपादान कारक	से	पंचमी
6.	संबंध कारक	का, के, की	षष्ठी
7.	अधिकरण कारक	में, पर	सप्तमी
8.	संबोधन कारक	हे, हो, अरे	प्रथमा

अब निम्नलिखित उदाहरणों को देखें—

(i)	छात्र	किताब	पढ़ता है।
	↓	↓	↓
	कर्त्ता एकवचन	कर्म एकवचन द्वितीया विभक्ति	क्रिया लट् लकार
	(छात्रः)	(पुस्तकं)	(पठति)

(ii)	छात्रा	कलम से	लिखती है।
	↓	↓	↓
	कर्त्ता एकवचन	करण एकवचन	क्रिया लट् लकार
	प्रथमा विभक्ति	**तृतीया विभक्ति**	**लिख + ति**
	छात्रा	**कलमेन**	**लिखति।**
(iii)	शिक्षक	ज्ञान के लिए	पढ़ाते हैं।
	↓	↓	↓
	कर्त्ता बहुवचन	सम्प्रदान कारक एकवचन	क्रिया लट् लकार बहुवचन
	प्रथमा बहुवचन	**चतुर्थी एकवचन**	
	शिक्षकाः	**ज्ञानाय**	**पाठयन्ति**
(iv)	पेड़ से	पत्ता	गिरता है।
	↓	↓	↓
	अपादान एकवचन	कर्त्ता एकवचन	क्रिया एकवचन
	पंचमी विभक्ति	**प्रथमा विभक्ति**	**लट् लकार (पत् + ति)**
	वृक्षात्	**पत्रं**	**पतति।**
(v)	मोहन का	पुत्र	आता है।
	↓	↓	↓
	संबंध कारक एकवचन	कर्त्ता एकवचन	क्रिया एकवचन
	षष्ठी विभक्ति	**प्रथमा विभक्ति**	**लट् लकार (आ + गच्छ् + ति)**
	मोहनस्य	**पुत्रः**	**आगच्छति।**
(vi)	बन्दर	पेड़ पर	रहता है।
	↓	↓	↓
	कर्त्ता एकवचन	अधिकरण एकवचन	क्रिया एकवचन
	प्रथमा विभक्ति	**सप्तमी विभक्ति**	**लट् लकार (वस् + ति)**
	वानरः	**वृक्षे**	**वसति।**

(vii)	हे राम !	तुम	किताब	पढ़ते हो।
	↓	↓	↓	↓
	संबोधन एकवचन	कर्त्ता एकवचन	कर्म एकवचन	क्रिया एकवचन
	प्रथमा विभक्ति	**प्रथमा विभक्ति**	**द्वितीया विभक्ति**	**लट्लकार मध्यम पुरुष**
	हे राम !	**त्वं**	**पुस्तकं**	**पठसि।**

ध्यातव्य—*यदि वाक्य में अव्ययों का प्रयोग हो तो उन्हें ज्यों-का-त्यों रखना चाहिए; क्योंकि अव्ययों का रूप नहीं बदलता है। नीचे लिखे अव्ययों को याद कर लें—*

अव्यय	हिन्दी अर्थ	अव्यय	हिन्दी अर्थ
अत्र	यहाँ	तत्र	वहाँ
कुत्र	कहाँ	सर्वत्र	सभी जगह
च	और		
तर्हि	तो	यत्	कि

अव्यय	हिन्दी अर्थ	अव्यय	हिन्दी अर्थ
उच्चैः	जोर-जोर से	शनैः-शनैः	धीरे-धीरे
वृथा	व्यर्थ/बेकार	दिवा	दिन में
चिरम्	देर तक	इतः	यहाँ से
ईषत्	थोड़ा	अहह	हाय
इत्थम्	इस प्रकार	अतीव	बहुत
केवलम्	सिर्फ	अञ्जसा	आसानी से
सम्प्रति	आजकल	अधुना	आजकल
ह्यः/श्वः	कल	अद्यापि	आज भी/आज तक
एवम्	इस प्रकार	कदाचित्	शायद
अतः	इसलिए	कुत्रचित्	कहीं
झटिति	जल्दी से	भूयः	पुनः
स्वयं	खुद	मिथः	आपस में
पुरा	पहले	प्रत्यहम्	रोज़
दिष्ट्या	सौभाग्य से	किम्	क्या
कथम्	क्यों	कदा	कब
यदा	जब	तदा	तब
न	नहीं	मा	मत

नीचे दिए गए उदाहरणों को देखें—

मैं वहाँ पढ़ता हूँ।	अहं तत्र पठामि।
वह क्यों नहीं खेलती है?	सा कथं न खेलति/क्रीडति?
हमलोग भारतवर्ष में रहते हैं।	वयं भारतवर्षे निवसामः।
तुम बेकार बोलते हो।	त्वं वृथा वदसि।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. वह जोर-जोर से बोलता है।
2. रमा नहीं पढ़ती है।
3. तुम घर में क्या करते हो?
4. शीला जल्दी से लिखती है।
5. वे दोनों कहाँ जाते हैं?
6. वे लोग बंगाल में रहते हैं।
7. गंगा हिमालय से निकलती है। वह सागर में मिलती है।
8. हिमालय हमारी रक्षा करता है।
9. तुमदोनों कहाँ खेलते हो?
10. हम विद्यालय में नहीं पढ़ते हैं।
11. तुमलोग वहाँ क्यों नहीं जाते हो?
12. बन्दर पेड़ पर रहता है।
13. शेर शहर में क्यों नहीं रहता है?

www.classroomnotes.in

14. शिक्षक विद्यालय में ही पढ़ाते हैं।
15. आजकल तुम क्यों नहीं नहाती हो ?
16. सूर्य पूरब में उगता है और पश्चिम में डूबता है।
17. मल्लाह नाव खेता है। लता गीत नहीं गाती है।
18. तुम अपनी किताब में क्या-क्या पढ़ते हो ?
19. नदी कहाँ से निकलती है ? कहाँ जाती है ?
20. किसान खेत में काम करते हैं।

इसी तरह निम्नलिखित लकारों की क्रिया के साथ कर्त्ताओं का संबंध स्थापित करना चाहिए। नीचे दी गई तालिका को समझें और संस्कृत में अनुवाद करें—

लङ् लकार (सामान्य भूतकाल)

(अ + धातु + प्रत्यय)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः/सा (तः)	तौ/ते (ताम्)	ते/ताः (अन्)
	रामः/बालक	रामौ/बालकौ	रामाः/बालकाः
	बालिका/फलम्	बालिके/फले	बालिकाः/फलानि
मध्यम पुरुष	त्वं (अः)	युवां (तम्)	यूयं (त)
उत्तम पुरुष	अहं (अम्)	आवां (आव)	वयं (आम)

उदाहरण :

वह घर गया — सः गृहम् अगच्छत्।
मैंने विद्यालय में पढ़ा — अहं विद्यालये अपठम्।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. राम विद्यालय गया।
2. सीता खा चुकी।
3. गंगा हिमालय से निकली।
4. मुनि आया।
5. वर्षा हुई। बादल छाया।
6. बिजली कड़की।
7. वह आयी। मैंने देखा।
8. उसने क्या कहा ?
9. तुमने किताब पढ़ी।
10. शिक्षक ने तुम्हें पढ़ाया।
11. कोयल बोली, मोर नाचा और वर्षा हुई।
12. बन्दर पेड़ पर चढ़ा।

लृट लकार (भविष्यत् काल)

(धातु + प्रत्यय)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः/सा/गजः/अजा/फलं (स्यति)	तौ/ते/गजौ/अजे/फले (स्यतः)	ते/ताः/गजाः/अजाः/फलानि (स्यन्ति)
मध्यम पुरुष	त्वं (स्यसि)	युवां (स्यथः)	यूयं (स्यथ)
उत्तम पुरुष	अहं (स्यामि)	आवां (स्यावः)	वयं (स्यामः)

उदाहरण :

वह विद्यालय नहीं जाएगी। — सा विद्यालयं न गमिष्यति।
तुम मैदान में नहीं खेलोगे। — त्वं क्रीडाक्षेत्रे न खेलिष्यसि।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. वर्षा होगी।
2. सूरज उगेगा।
3. चूहा आएगा।
4. तितली नाचेगी।
5. बाढ़ आएगी।
6. रमा मेरे साथ खेलेगी।
7. नानी कहानी कहेगी।
8. कृष्ण बाँसुरी बजाएगा।
9. वे दोनों मंच पर गाएँगे।
10. रात होगी, तारे निकलेंगे।
11. फूल खिलेंगे, बसन्त आएगा।
12. एक राजा आएगा।
13. वह किताब लिखेगी।
14. माँ पत्र लिखेगी।
15. लड़का पत्र पढ़ेगा।
16. शिक्षक कक्षा में पढ़ाएँगे।
17. वह फिल्म देखने जाएगी।
18. दो छात्र घर से निकलेंगे।
19. पेड़ों से पत्तियाँ गिरेंगी।
20. बन्दर पेड़ पर चढ़ेगा।

लोट् लकार (अनुज्ञा या आज्ञा के अर्थ में)

(धातु + प्रत्यय)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सा/सः/फलम् (तु)	ते/तौ/फले (ताम्)	ताः/ते/फलानि (अन्तु)
मध्यम पुरुष	त्वं (हि)	युवाम् (तम्)	यूयम् (त)
उत्तम पुरुष	अहम् (आनि)	आवाम (आव)	वयम् (आम)

उदाहरण :

तुम घर जाओ	त्वं गृहं गच्छ।
वह विद्यालय आए	सः विद्यालयं आगच्छतु।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. रामू फिल्म देखे।
2. वह गाना गाए।
3. नौकर घर साफ करे।
4. तुम वहाँ जाओ।
5. वह यहाँ नहीं आए।
6. तुम मुझे समझाओ।
7. सोहन किताब पढ़े।
8. पक्षी आकाश में उड़े।
9. माँ गंगा स्नान करे।
10. मैं वहाँ क्यों जाऊँ ?
11. वह घर नहीं आए।
12. तुम वहाँ मत जाओ।
13. हे कृष्ण ! यहाँ आओ।
14. प्रिय पुत्र ! वहाँ मत जाओ।

विधिलिङ् (चाहिए के अर्थ में)

(धातु + प्रत्यय)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः/सा/फलम् (एत्)	तौ/ते/फले (एताम्)	ते/ताः/फलानि (एयुः)

मध्यम पुरुष	त्वम् (एः)	युवाम् (एतम्)	यूयम् (एत)
उत्तम पुरुष	अहम् (एयम्)	आवाम् (एव)	वयम् (एम)

उदाहरण :

उसे घर जाना चाहिए — सः गृहं गच्छेत्।

तुम्हें नहीं बोलना चाहिए — त्वं न वदेः।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. अचानक (सहसा) कुछ नहीं करना चाहिए।
2. तुम्हें सत्य बोलना चाहिए।
3. रमेश को पढ़ना चाहिए और सीता को लिखना चाहिए।
4. तुमको वहाँ कभी नहीं जाना चाहिए।
5. उन्हें विद्यालय जाना चाहिए।
6. नीतीश को राज्य का भ्रमण करना चाहिए।
7. आकाश में बादल छाना चाहिए।
8. सूर्य को उगना चाहिए।
9. हमें पेड़ नहीं काटने चाहिए।
10. तुम्हें झूठ नहीं बोलना चाहिए।
11. पिताजी को आराम करना चाहिए।
12. उसे दिन में नहीं आना चाहिए।
13. तुम्हें उनकी रक्षा करनी चाहिए।
14. मुझे उनकी सेवा करनी चाहिए।
15. लड़कों को मैदान में खेलना चाहिए।

(घ) कारकों का विशेष प्रयोग/विभक्ति-प्रयोग

1. **'अधि + शी/स्था/आस्' ऐसा रहने पर द्वितीया विभक्ति होती है।** जैसे—
   लड़का शय्या पर सोता है—बालकः शय्याम् अधिशेते।
   हम आसन पर बैठते हैं—वयम् आसनं अधितिष्ठामः।
   राही वृक्ष की छाया में बैठता है—पथिकः वृक्षच्छायाम् अध्यास्ते।
2. **उप/अनु/आ + वस् (द्वितीया विभक्ति)** इसी तरह 'वस्' धातु के पूर्व उप/अनु/आ उपसर्ग रहने पर उसके पूर्व के पदों में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—
   मुनि वन में निवास करते हैं—मुनयः वनम् अधिवसन्ति।
   वह घर में निवास करता है—सः गृहम् अधिवसति।
3. **उपसर्ग + क्रुद्‌। द्रुह (द्वितीया विभक्ति)**
   उदाहरण— राम रावण पर क्रोध करता है—रामः रावणम् अभिक्रुध्यति।
   श्याम राम से द्रोह करता है —श्यामः रामम् अभिद्रुह्यति।
4. **अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), निकषा (निकट), प्रति (ओर), अन्तरा (बीच में), अन्तरेण (बिना), यावत् (तक) आदि के पूर्व पदों में द्वितीया विभक्ति होती है।**
   उदाहरण— गाँव के दोनों ओर— ग्रामम् अभितः

विद्यालय के चारों ओर—विद्यालयं परितः
घर के निकट—गृहं निकषा
मेरी ओर—मां प्रति

5. **अत्यन्त संयोग होने पर कालवाची एवं मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है।**
उदाहरण— एक कोस तक नदी टेढ़ी है—क्रोशं कुटिला नदी अस्ति।
महीने भर संस्कृत पढ़ा—मासम् संस्कृतम् अपठत्।

6. **द्विकर्मक क्रिया रहने पर संबंध के स्थान पर द्वितीया विभक्ति होती है।**
निम्नलिखित क्रियाएँ द्विकर्मक हैं—
"दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्-मुषाम्।
कर्मयुक् स्याद् अकथितं तथा स्यात् नी, हृ, कृष्-वहाम्।।
उदाहरण— गोपः गां दोग्धि पयः।
वामनः बलिं वसुधां याचते।
सः मां धर्मं पृच्छति
धर्मं शास्ति शिष्यं गुरुः।

7. **फल-प्राप्ति के साथ काम समाप्त हो तो मार्गवाची एवं कालवाची शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है।**
उदाहरण— उसने एक वर्ष में व्याकरण पढ़ लिया।
सः वर्षेण व्याकरणम् अपठत्।
मैंने तीन कोस में कहानी कह दी।
अहं कोशत्रयेण कथाम् अकथयम्।

8. **सह, साकम्, सार्धम् (साथ) के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।**
उदाहरण— पिता पुत्र के साथ घर जाता है। — पिता पुत्रेण सह गृहं गच्छति।
सीता के साथ लक्ष्मण वन गया। — सीतया सह लक्ष्मणः वनं गतः।

9. **पृथक्, विना, नाना के योग में द्वितीया, तृतीया और पंचमी तीनों विभक्तियाँ लगती हैं।**
उदाहरण— ज्ञान के बिना—ज्ञानं विना/ज्ञानेन विना/ज्ञानात् विना
राम से पृथक—रामं/रामेण/ रामात् पृथक

10. **ऊन (कम), वारण (अलम्, किम्, कृतम्) और तुल्यार्थक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है।**
उदाहरण— एक कम—एकेन हीनः
राम के समान—रामेण तुल्यः। सदृशः

11. **जिसे दान दिया जाय, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।**
उदाहरण— वह ब्राह्मणों को धन देता है—सः ब्राह्मणेभ्यः धनं ददाति।
तुम मुझे फल देते हो—त्वं मह्यं फलं यच्छसि।

12. **नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट् के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।**
उदाहरण— श्रीगणेश को नमस्कार है—श्रीगणेशाय नमः
प्रजा का कल्याण हो—प्रजाभ्यः स्वस्ति।
अग्नि को समर्पित है—अग्नये स्वाहा।

13. जिससे डरा जाय या रक्षा की जाय उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

उदाहरण— रमेश संकट से मेरी रक्षा करता है।
रमेशः संकटात् मां त्रायते।
वह बाघ से डरती है।
सा व्याघ्रात् विभेति।

14. जब बहुत व्यक्तियों या वस्तुओं में किसी को सर्वश्रेष्ठ या निकृष्ट बताया जाय, तब उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ लगती हैं।

उदाहरण— कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।
कवीनां/कविषु कालिदासः श्रेष्ठः
मानवों में दिनेश निकृष्ट है।
मानवानां/मानवेषु दिनेशः निकृष्टः।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

राम संस्कृत पढ़ता है। यह लड़का विद्यालय में नहीं पढ़ता है। हे परमात्मा! मेरी रक्षा करो। हरि से पुस्तक पढ़ी जाती है। लता मधुर गाती है। यह आदमी सच बोलता है। वह महीने भर पढ़ता है। रास्ते के दोनों ओर पेड़ हैं। विद्यालय के चारों ओर रास्ते हैं। घर के चारों ओर पहाड़ हैं। मेरे गाँव के निकट एक नदी है। स्कूल के समीप खेल का एक मैदान है। गरीबों पर दया करो। पापियों को धिक्कार है। अध्ययन के बिना विद्या नहीं आती। धर्म के बिना मोक्ष नहीं मिलता है। उसने महीने भर में व्याकरण पढ़ लिया। तुमने चार वर्षों में घर बना लिया। तुम मेरे साथ बैठो। वह आँख से काना है। दिनेश कान से बहरा है। गोपाल पैर से लँगड़ा है। वह पीठ से कुबड़ी है। वह गर्व से शून्य है। झगड़े से क्या लाभ? विवाद करना बेकार होता है। माँ भिखारी को भोजन देती है। मैं धोबी को कपड़े देता हूँ। सरकार छात्रों को साइकिल देती है। हनुमान को प्रणाम है। कंस कृष्ण पर क्रोध करता है। गोपी सुरेश से ईर्ष्या करता है। वह मोक्ष के लिए ईश्वर की भक्ति करता है। बच्चा मिठाई के लिए रोता है। बहु ससुर से शर्माती है। यह विद्यार्थी शिक्षक से संस्कृत पढ़ता है। गंगा हिमालय से निकलती है। वह साँप से डरता है। आत्मा परमात्मा से अलग नहीं है। ज्ञान से रहित व्यक्ति पशु के समान है। वह चमड़े के लिए हरिण मारता है। वह सही राह पर नहीं चलता है।

(ङ) कुछ महत्त्वपूर्ण प्रत्ययों का प्रयोग

(i) तुमुन प्रत्यय—निमित्तार्थक क्रिया में 'तुमुन्' प्रत्यय लगाया जाता है यानी यदि क्रिया में 'के लिए' लगा रहे तो उसमें (उस धातु में) 'तुमुन्' प्रत्यय लगा देना चाहिए; लेकिन ध्यान रहे दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही रहे। 'तुमुन्' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होने के कारण अपरिवर्तनशील होता है।

उदाहरण— वह पढ़ने के लिए यहाँ आता है।
सः पठितुम् अत्र आगच्छति।

'सकना' और समर्थसूचक शब्दों में (यथा अलम्, कुशलम्, पटु, निपुण, पर्याप्त, समर्थ आदि) 'तुमुन्' का प्रयोग होता है।

उदाहरण— वह पढ़ सकती है। सा पठितुम् शक्नोति।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. वह खाने के लिए घर जाता है।
2. मैं पढ़ने के लिए विद्यालय जाती हूँ।
3. वह लिख सकता है।
4. तुम दौड़ सकते हो।
5. पुजारी पूजा के लिए मंदिर जाता है। *(अर्थितुम्)*
6. व्यापारी खरीदने के लिए बाजार जाता है। *(क्रेतुम्)*
7. वह फूल चुनने के लिए वाटिका जाती है। *(चेतुम्)*
8. वह घर जा सकता है। *(गन्तुम्)*
9. रमेश खेलने के लिए यहाँ आता है। *(क्रीडितुम्)*
10. मेघ गरजने के लिए बरसता है। *(गर्जितुम्)*
11. वह तुम्हें वहाँ छोड़ने के लिए जाता है। *(त्यक्तुम्)*
12. वह सोने के लिए छत पर जाता है। *(शयितुम्)*
13. वे खा सकते हैं। *(खादितुम्)*
14. मंगला नाचने में कुशल है। *(नर्तितुम्)*
15. तुम पुरस्कार पा सकते हो। *(लब्धुम्)*
16. हम नौकरी पाने के लिए शहर जाते हैं। *(प्राप्तुम्)*
17. हमलोग साँप मार सकते हैं। *(हन्तुम्)*

(ii) क्त्वा एवं ल्यप्—पूर्वकालिक क्रिया में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग होता है। 'क्त्वा' में 'त्वा' रहता है। उपसर्ग रहने पर 'ल्यप्' प्रत्यय लगाया जाता है। 'ल्यप्' में 'य' शेष रहता है। इन दोनों प्रत्ययों के योग से बने शब्द भी अव्यय होने के कारण अपरिवर्तनशील होते हैं।

उदाहरण— वह खाकर विद्यालय जाता है।
सः भुक्त्वा विद्यालयं गच्छति।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. वह खड़ा होकर बोला। *(उत्थाय)*
2. दादी नहाकर रामायण पढ़ती है। *(स्नात्वा)*
3. नानी कहानी कहकर सो गई। *(कथित्वा)*
4. छात्र प्रश्न पूछकर चुप हो गया। *(पृष्ट्वा)*
5. तुम यह जानकर क्या करोगे? *(ज्ञात्वा)*
6. वह दवा देकर चला गया। *(दत्वा)*
7. शीला हँसकर बोली। *(हसित्वा)*
8. फल गिरकर फट गया। *(पतित्वा)*
9. लेखक लेख लिखकर टहलने के लिए गया। *(लेखित्वा)*
10. वह काँपकर रह गया। *(प्रकम्प्य)*

11. वह पुरस्कार प्राप्त कर खुश हो गया। *(लब्ध्वा)*
12. तुम किसी का अपकार कर खुश नहीं रह सकते। *(अपकृत्य)*
13. द्वारपाल प्रवेश कर बोला। *(प्रविश्य)*
14. सुषमा मुझे देखकर हँसती है। *(दृष्ट्वा)*
15. लता गीत गाकर चली गई। *(गीत्वा)*
16. तुम मुझे देखकर क्यों हँसती हो?
17. बन्दर उछलकर पेड़ पर चढ़ गया। *(उत्पलुत्य)*
18. चोरों को पीटकर सिपाही थक गया। *(ताडयित्वा)*
19. मूर्ख लोग कार्यों को आरंभ कर छोड़ देते हैं। *(प्रारम्य)*
20. तेरे पत्र पाकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। *(प्राप्य)*

(iii) शतृ एवं शानच्—जिन क्रियाओं में हुआ, हुए, हुई या 'ते' हुए लगा रहता है उसमें शतृ एवं शानच प्रत्यय का प्रयोग होता है। शतृ प्रत्यय में 'अन' लगाकर विशेषण के रूप में व्यवहृत होता है तथा शानच् प्रत्यय में क्रिया से 'मान' लगाया जाता है। परस्मैपदी धातु में 'शतृ' और आत्मनेपदी में 'शानच' का प्रयोग होता है। शतृ-प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिग में 'धावत्', स्त्रीलिंग में 'ती' 'न्ती' लगाकर तथा नपुंसक लिंग में 'जगत्' के समान होते हैं। शानच्-प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिग में 'गज', स्त्रीलिंग में 'लता' और नपुंसकलिंग में 'फल' के समान चलते हैं।

उदाहरण—

वह हँसते हुए बोला।	सः हसन् अवदत्।
हम हँसते हुए बोलते हैं।	अहं हसन् वदामि।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. सीता ने हँसते हुए कहा कि आप बोलते हुए क्यों खाते हैं?
2. शिक्षक ने पढ़ाते हुए कहा कि पृथ्वी गोल है।
3. तीव्र वेग से आते हुए शेर को देखकर वह भयभीत हो गई।
4. खुशी से नाचते हुए लड़कों ने शिक्षक से कहा।
5. मुझे देखते हुए वह बोली कि आज भी मैं उसे चाहता हूँ।
6. वृक्षों से गिरते हुए पत्तों को देखकर वह सोचता है।
7. रोती हुई बच्ची को वह उठाकर प्यार करता है।
8. बिल गेट्स ने बिलखते हुए लोगों से कहा।
9. रास्ते पर चलता हुआ बच्चा गिर गया।
10. वह सोचते हुए चल रहा था।
11. विद्यालय जाते हुए उसने मुझसे कहा कि कल अवकाश है।
12. तुम मत जाओ वरना मुझे रोते हुए देखोगे।
13. क्रोध से गरजते हुए पिता ने डाँटा।
14. चरित्र से गिरते हुए बच्चे को शिक्षक ने सँभाला।
15. मुझे आते हुए देखकर लड़के मैदान से भाग गए।
16. रोते हुए बच्चे को छोड़कर माँ काम पर चली गई।
17. नानी कहानी सुनाते हुए सो गई।

(iv) तव्यत् (तव्य) एवं अनीयर (अनीय)—'चाहिए', 'योग्य है' आदि अर्थ बोध होने पर तव्यत् या अनीयर प्रत्यय लगाकर अनुवाद करना चाहिए। ये दोनों प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में होते हैं। उक्त प्रत्ययों के योग में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति, कर्म में प्रथमा विभक्ति और कर्म के अनुसार ही क्रिया को तव्यत् या अनीयर् प्रत्यय में रखना चाहिए। इसका रूप पुँ० में 'देव' के समान, स्त्रीलिंग में 'लता' के समान और नपुंसकलिंग में 'फल' के समान होता है।

उदाहरण— राम को ग्रन्थ पढ़ना चाहिए
रामेण ग्रन्थः पठितव्यः।
सीता को गीता पढ़नी चाहिए।
सीतया गीता पठितव्या।
मुझे खाना चाहिए।
मया खादितव्यम्।

अभ्यास

संकृते अनुवादं कुरु—

1. मुझे घर जाना चाहिए।
2. तुम्हें पुस्तक पढ़नी चाहिए।
3. कुत्ते का सूँघना चाहिए।
4. लड़कों को खेलना चाहिए।
5. पिताजी को मिठाई लानी चाहिए।
6. शिक्षक को पढ़ाना चाहिए।
7. तुम्हें यह काम कभी नहीं करना चाहिए।
8. लता को यह गीत गाना चाहिए।
9. लोगों को यह फिल्म देखनी चाहिए।
10. हमें पेड़ नहीं काटने चाहिए।
11. तुम्हें अपने देश की सेवा करनी चाहिए।
12. हमें दूसरों की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
13. छात्रों को शिक्षकों की बातों पर ध्यान देना चाहिए।
14. हमें गरीबों की सहायता करनी चाहिए।
15. हमें नम्र होना चाहिए।

(v) क्त और क्तवतु—'क्त' प्रत्यय तीनों वचनों में जबकि 'क्तवतु' केवल कर्तृवाच्य में लगता है। इन दोनों प्रत्ययों से भूतकाल की क्रिया बनाई जाती है। 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण का रूप ले लेता है, जिसका विशेष्य वाक्य का कर्त्ता ही होता है और कर्त्ता के लिंग, वचन के अनुसार ही इसका रूप होता है। 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द का रूप पुँ० में 'देव', स्त्रीलिंग में 'लता' एवं नपुंसक लिंग में 'फल' के समान होता है।

'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्द पुँ० में श्रीमत्, स्त्री० में 'नदी' के समान और नपुंसकलिंग में 'जगत्' के समान होता है।

www.classroomnotes.in

उदाहरण—	हाथी गया	गजः गतः/गतवान्।
	दो हाथी गए	गजौ गतौ / गतवन्तौ।
	हाथी गए	गजाः गताः / गतवन्तः।
	राधा गई	राधा गता / गतवती।

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
देवदत्तेन पुस्तकं पठितम्।	देवदत्तः पुस्तकं पठितवान्।
रामेण जलं पीतम्।	रामः जलं पीतवान्।

अभ्यास

संस्कृते अनुवादं कुरु—

1. राम ने रावण को मारा। (हतः/हतवान्)
2. तुमने नदी के तट पर मुझे देखा। (दृष्टः/दृष्टवान्)
3. आतंकवादी ने वशीम को अपहृत किया। (अपहृतः/अपहृतवान्)
4. पुलिस ने चोर को पकड़ा। (गृहीतः/गृहीतवान्)
5. भरत ने शेर को छोड़ दिया। (मुक्तः/मुक्तवान्)
6. शिक्षक ने पाठ पढ़ाया। (पाठितः/पाठितवान्)
7. बच्चों ने कहानी सुनी। (श्रुतः/श्रुतवान्)
8. छात्र विद्यालय गए।
9. लड़कों ने क्रिकेट खेला। (क्रीडितम्/क्रीडितवान्)
10. पिताजी मुझपर क्रुद्ध हुए। (क्रुद्धः/क्रुद्धवान्)
11. सीता ने भात खाया। (मुक्तः/मुक्तवान्)
12. छात्रों ने व्याकरण पढ़ा। (पठितः/पठितवान्)
13. वह मुझे भूल गई। (विस्मृत)
14. तुमने डूबते हुए बच्चे को बचाया। (त्रातः/त्रातवान्)
15. देवताओं ने राक्षसों को मारा। (हतः/हतवान्)
16. देवों ने सागर को मथा। (मथितः/मथितवान्)
17. उसको साँप ने काट लिया। (दंशितः/दंशितवान्)
18. तुमको ठग ने ठग लिया। (वंचितः/वंचितवान्)
19. डाकुओं ने मुसाफिर को लूट लिया। (लुंठितः/लुंठितवान्)
20. आपने मेरी निन्दा क्यों की? (निन्दितः/निन्दितवान्)

कुछ महत्त्वपूर्ण वाक्यों का अनुवाद
(U.P. Board में पूछे गए 2010 तक के)

1. वाराणसी गंगा के तट पर बसी है।
   वाराणसी गंगायाः तटे अवस्थिता।
2. वाराणसी धर्मों की संगमस्थली है।
   वाराणसी धर्माणां संगमस्थली अस्ति।
3. वह पैर से लँगड़ा है।
   सः पादेन खञ्जः अस्ति।

www.classroomnotes

4. कुएँ ने कहा, 'मैं नीचा हूँ।'
कूपः अकथयत्,''अहं नीचः अस्मि।

5. उद्यान में मोर देखो।
उद्याने मयूरं पश्य।

6. अपना कर्त्तव्य शीघ्र करो।
स्व कर्त्तव्यं शीघ्रं कुरु।

7. केशव! जाओ और पढ़ो।
केशव!गच्छ पठ च।

8. मैं प्रतिदिन स्नान करता हूँ।
अहं प्रतिदिनं स्नानं कुर्यामि।

9. अपने राष्ट्र की सेवा करना हमारा धर्म है।
स्व राष्ट्रसेवाम् अस्माकं धर्मः अस्ति।

10. तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार होना चाहिए?
त्वयि कथं वर्तितव्यम्?

11. एक वीर दूसरे वीर का सम्मान करता है।
एकः वीरः अपरस्य वीरस्य सम्मानं करोति।

12. अलग-अलग वेशभूषा होने पर भी हम सब एक हैं।
पृथग वेशभूषाः अपि वयं सर्वे एकीभूताः स्मः।

13. विदुला ने अपने पुत्र की निन्दा की।
विदुला स्वपुत्रं जगर्हे।

14. उपकारी पुरुष श्रेष्ठ होता है।
उपकारी पुरुषः श्रेष्ठः भवति।

15. 'तुम्हारा कार्य होगा' यह विश्वास करके उठो।
'तव कार्यं भविष्यति' इति विश्वासं कृत्वा उत्तिष्ठ।

16. आज वर्षा नहीं होगी।
अद्य वृष्टिः न भविष्यति।

17. तुम कल कहाँ जाओगे और क्या करोगे?
त्वं श्वः कुत्र गमिष्यसि किं करिष्यसि च ?

18. सभी छात्राएँ पत्र लिखेंगी।
सर्वाः छात्राः पत्राणि लेखिष्यन्ति।

19. विद्यालय हमारा घर है।
विद्यालयः अस्माकं गृहम् अस्ति।

20. सभी सुखी रहें।
सर्वे सुखिनः सन्तु।

21. अभ्यास से विद्या बढ़ती है।
अभ्यासेन विद्या वर्धते।

www.classicnotes.in

22. युवकों को शारीरिक श्रम करना चाहिए।
युवकाः शारीरिक-श्रमं कुर्युः।

23. रामकृष्ण एक विलक्षण पुरुष थे।
रामकृष्णः एकः विलक्षण पुरुषः आसीत्।

24. सदाचार की सर्वथा रक्षा करनी चाहिए।
सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः।

25. दान से कीर्ति बढ़ती है।
दानेन कीर्तिः वर्धते।

26. सदाचार से विश्वास बढ़ता है।
सदाचारेण विश्वासः वर्धते।

27. बुरे वचनों से कलह होता है।
दुर्वचनैः कलहः भवति।

28. सत्य से धर्म की वृद्धि होती है।
सत्येन धर्मः वर्धते।

29. वहाँ उजाला था; पर सूर्य न था।
तत्र आलोकः आसीत्; परं सूर्यः नासीत्।

30. न वहाँ वृक्ष थे, न लताएँ।
न तत्र वृक्षाः आसन्, न च लताः।

31. विनय मानवों का भूषण है।
विनयः मनुष्याणां भूषणम् अस्ति।

32. ''विश्व का स्वामी एक है''—यही हमारी संस्कृति का मूल है।
''विश्वस्य स्वामी एकः अस्ति''—अयमेव अस्माकं संस्कृतेः मूलम् अस्ति।

33. माता भूमि से बढ़कर है।
माता भूमेः गुरुतरा भवति।

34. चोर घर में घुस गए।
चौराः गृहे अप्रविशन्।

35. गंगा भारत की पावन नदी है।
गंगा भारतस्य पवित्रा नदी अस्ति।

36. रमेश मथुरा में पढ़ता है।
रमेशः मथुरायां पठति।

37. मथुरा यमुना के किनारे स्थित है।
मथुरा यमुनायाः तटे स्थिताअस्ति।

38. लक्ष्मण राम के साथ वन गए।
लक्ष्मणः रामेण सह, वनं गतः।

39. छात्रों को समय से विद्यालय जाना चाहिए।
छात्राः समयेन विद्यालयं गच्छेयुः।

www.classroomnotes.in

40. भारत मेरा राष्ट्र है।
भारतः मम राष्ट्रोऽस्ति।

41. राम, सीता और लक्ष्मण अयोध्या से वन गए।
रामः सीता लक्ष्मणश्च अयोध्यात् वनम् अगच्छन्।

42. गीता का क्या संदेश है?
गीतायाः किं सन्देशः अस्ति?

43. वह आँख से काना है।
सः नेत्रेण काणः अस्ति।

44. सैनिक युद्ध के लिए गए।
सैनिकाः युद्धाय अगच्छन्।

45. हम सबको पढ़ना चाहिए।
वयं पठेम।

46. छात्रों में राजेन्द्र श्रेष्ठ है।
छात्रेषु राजेन्द्रः श्रेष्ठः।

47. वृक्ष से फल गिरा।
वृक्षात् फलम् अपतत्।

48. वह चला गया।
सः अगच्छत्।

49. हमारे राष्ट्रपति महान् वैज्ञानिक थे।
अस्माकं राष्ट्रपति महान् वैज्ञानिकः आसीत्।

50. दशरथ अयोध्या के राजा थे।
दशरथः अयोध्यायाः राजा आसीत्।

51. परिश्रम और निष्ठा से प्रत्येक कार्य संभव है।
परिश्रमेण निष्ठया च प्रत्येकं कार्यं सम्भवम् अस्ति।

52. हमें कठिनतम् परिस्थिति में निराश नहीं होना चाहिए।
वयं कठिनतम परिस्थितौ अपि निराशं न भवेम।

53. कल हमलोग प्रयाग गए थे।
ह्यः वयं प्रयागम् अगच्छाम।

54. गाय दूध देती है।
धेनुः दुग्धं ददाति।

55. सुभाषचन्द्र बोस परम देशभक्त थे।
सुभाषचन्द्रबोसः परमदेशभक्तः आसीत्।

56. निर्धन की सहायता करो।
निर्धनस्य सहायतां कुरु।

57. श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।
श्रीकृष्णः अर्जुनाय गीतायाः उपदेशम् अवददात्।

www.classroomnotes.in

58. मेरा गाँव यमुना के किनारे है।
मम ग्रामः यमुनातटे अस्ति।

59. शिष्य ने गुरु से प्रश्न पूछा।
शिष्यः गुरु प्रश्नम् अपृच्छत्।

60. सूर्य के उदय होने पर कमल खिलता है।
सूर्योदये कमलं विकसति।

61. संसार अपकारी की प्रशंसा नहीं करता है।
संसारः अपकारिणः प्रशंसां न करोति।

62. गोमती नदी कहाँ बहती है?
गोमती नदी कुत्र प्रवहति?

63. परिश्रम का फल मीठा होता है।
परिश्रमफलं मधुरं भवति।

64. तुम्हारे विद्यालय की क्या विशेषता है?
तव विद्यालयस्य का विशेषता अस्ति?

65. संतोष सबसे बड़ा धन है।
संतोषः सर्वोच्चं धनम् अस्ति।

66. वे दोनों कल पर्यटन पर जाएँगे।
तौ श्वः पर्यटने गमिष्यतः।

67. रात बीतेगी और सुन्दर प्रभात होगा।
रात्रिः गमिष्यति सुप्रभातं च भविष्यति।

68. गाँव के चारों ओर बाग है।
ग्रामं परितः उद्यानम् अस्ति।

69. अभद्र छात्र कक्षा में हँसा।
अभद्रः छात्रः कक्षे अहसत्।

70. सभी नीरोग रहें तथा सभी सुखी हों।
सर्वे भवन्तु सुखिनः च सर्वे सन्तु निरामयाः।

71. हमें श्रेष्ठ पुरुषों का सम्मान करना चाहिए।
वयं श्रेष्ठानां पुरुषाणां सम्मानं कुर्याम।

72. असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।
असत्यं सत्येन जयेत्।

73. पुरुराज ने किसके साथ युद्ध किया?
पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत्?

74. विद्या विनय प्रदान करती है।
विद्या विनयं प्रददाति।

75. छात्रों को सदा सत्य बोलना चाहिए।
छात्राः सदा सत्यं वदेयुः।

www.classroomnotes.in

76. हमें प्रातःकाल भ्रमण करना चाहिए।
वयं प्रातःकाले भ्रमेम।

77. मैं आज कानपुर जाऊँगा।
अहम् अद्य कानपुरं गमिष्यामि।

78. विद्या सभी धनों में प्रधान है।
विद्या सर्वेषु धनेषु प्रधानम् अस्ति।

79. हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।
हिन्दी अस्माकं राष्ट्रभाषा अस्ति।

80. तुम नगर से कब लौटे?
त्वं नगरात् कदा प्रत्यागच्छसि?

81. हमलोग एकता की भावना से देश का उत्थान करेंगे।
वयम् ऐक्यभावनायाः देशोत्थानं करिष्यामः।

परीक्षाओं में पूछे गए विभक्ति-संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों में गहरे काले छपे पदों के कारकों तथा संबंधित सूत्रों का उल्लेख करें— **(U.P. Board, 2005-2010)**

1. सः **शिष्याय** पुस्तकं ददाति।
2. **वृक्षात्** पत्राणि पतन्ति।
3. **राजमार्गे** अश्वः धावति।
4. सः **मह्यं** पुस्तकं ददाति।
5. महाजनः **भिक्षुकेभ्यः** भोजनं ददाति।
6. किरण **प्रासादात्** आगच्छति।
7. सः **गृहे** निवसति।
8. फलानि **कूपे** पतन्ति।
9. **रोगात्** मुक्तः बालकः पाठशालां गच्छति।
10. खगाः **वृक्षेषु** वसन्ति।
11. नृपः **ब्राह्मणाय** गां ददाति।
12. **वृक्षे** पुष्पाणि विकसन्ति।
13. ऋषिः **आसने** तिष्ठति।
14. कृष्णः **गोकुले** वसति।
15. दिलीपः **प्रयागात्** कर्णपुरं गच्छति।
16. सः **पर्यङ्के** स्वपिति।
17. भारतस्य **आत्मा** ग्रामे निवसति।

उत्तर

(क) सम्प्रदान कारक—प्र०नं० 1, 4, 5, 11—सम्प्रदाने चतुर्थी
(ख) अपादान कारक—प्र०नं० 2, 6, 9, 15—अपादाने पञ्चमी
(ग) अधिकरण कारक—प्र०नं० 3, 7, 8, 10, 12, 13, 14, 16—अधिकरणे सप्तमी
(घ) कर्त्ता कारक—प्र०नं०17—क्रिया सम्पादकः कर्त्ता

★★★

www.classroomnotes.in